''पौलुस, तूने कैसे किया?'' (21:17-26)

यरूशलेम जाकर पौलुस कलेश आने की अपेक्षा कर रहा था (रोमियों 15:30, 31; प्रेरितों 20:22, 23)। उसे यह सम्भावना थी कि यहूदी मसीही घमण्ड के कारण गैर यहूदी मसीहियों से मिले चन्दे को स्वीकार नहीं करेंगे। वह जानता था कि उसे पूर्व सहयोगियों से, जो उसे विश्वासघाती मानते थे, कलेश उठाना पड़ सकता है। आत्मा ने उसे बता दिया था कि उसे गिरफ्तार किया जाएगा। यरूशलेम की गलियों से गुजरते हुए इस हैरानी से कि कलेश किस ओर से आएगा, वह बार-बार इधर-उधर देख रहा होगा। फिर वह प्राचीनों की सभा में चला गया, जहां उसे लगता था कि वह सुरक्षित होगा, और कलेश वहीं पर था!

> उन्होंने ... उससे कहा; हे भाई, तू देखता है, कि यहूदियों में से कई हजार ने विश्वास किया है; और सब व्यवस्था के लिए धुन लगाए हैं। और उन को तेरे विषय में सिखाया गया है, कि तू अन्यजातियों में रहनेवाले यहूदियों को मूसा से फिर जाने को सिखाता है, और कहता है, कि न अपने बच्चों का खतना कराओ और न रीतियों पर चलो: सो क्या किया जाए? लोग अवश्य सुनेंगे, कि तू आया है। इसलिए जो हम तुझ से कहते हैं, वह कर: हमारे यहां चार मनुष्य हैं, जिन्होंने मन्नत मानी है। उन्हें लेकर उन के साथ अपने आप को शुद्ध कर; और उनके लिए खर्चा दे, कि वे सिर मुंडाएं: तब सब जान लेंगे, कि जो बातें उन्हें तेरे विषय में सिखाई गईं, उनकी कुछ जड़ नहीं है परन्तु तू आप भी व्यवस्था को मानकर उसके अनुसार चलता है (21:20-24)।

हमें हैरानी होती है कि पौलुस ने उनकी असाधारण मांग को पूरा कर दिया: ''तब पौलुस उन मनुष्यों को लेकर, और दूसरे दिन उनके साथ शुद्ध होकर मन्दिर में गया, और बता दिया, कि शुद्ध होने के दिन, अर्थात उन में से हर एक के लिए चढ़ावा चढ़ाए जाने तक के दिन कब पूरे होंगे'' (आयत 26)। यह जानते हुए कि उन बलिदानों में पाप बलियां भी थीं, हम चिल्ला उठते हैं, ''हे पौलुस, ये बलिदान क्यों?''

हमारे मनों में कई प्रश्न हैं: पौलुस ने सही किया या गलत? क्या आज बलिदान चढ़ाना सही होगा, विशेषकर यदि हम यहूदी होते तो? इस पाठ में हम इन्हीं प्रश्नों को हल करने का प्रयास करेंगे।

मनुष्य की उलझाने वाली बातें

आइए इस प्रश्न के साथ आरम्भ करते हैं ''प्राचीनों की मांग को पूरा करके क्या पौलुस ने सही किया?'' इस मुद्दे पर विचार की सम्माननीय मसीही विद्वानों में भी कोई सहमति नहीं मिलती, अध्ययन के उद्देश्य से मैं अपनी इच्छा से असंख्य दृष्टिकोणों को चार शीर्षकों में बांटता हूं:

बिना शर्त के ''हां!''

कुछ लोग इस प्रश्न का उत्तर बिना शर्त के ''हां'' बताते हैं! उनका मानना है कि जो कुछ भी पौलुस और प्राचीनों ने किया वह बिल्कुल सही था, और उनका ढंग हमेशा हर जगह सही होगा और उनकी प्रशंसा और जोशपूर्ण अनुकरण होना चाहिए। यह गुट पौलुस के ध्यानाकर्षक उदाहरण, कि उसका क्या अर्थ था जब उसने कहा, ''मैं सब मनुष्यों के लिए सब कुछ बना हूं, कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊं'' (1 कुरिन्थियों 9:22ख) और रोमियों 14 निर्बल भाइयों को सहने की पौलुस की शिक्षा के सम्पूर्ण चित्रण की ओर ध्यान दिलाता है।

इसके प्रमाण के रूप में कि जो कुछ पौलुस और प्राचीनों ने किया वह सब सही था, पहला गुट ध्यान दिलाता है कि लूका ने उनके कार्य की कहीं पर भी निन्दा नहीं की, और उस घटना में अपने योगदान के बारे में पौलुस का विवेक शुद्ध था (23:1)। इस गुट का मानना है कि पौलुस के काम लोगों के साथ मिलकर चलने के महत्व को रेखांकित करते हैं, और कुछ लोग तो यहां तक सिखाते हैं कि उसके व्यवहार से प्रमाणित होता है कि शिक्षा सम्बन्धी बातों से बचाव करने से अधिक मेल को बढ़ाना महत्वपूर्ण है।

इस स्थिति के कुछ पहलुओं पर मैं सहमत हो सकता हूं परन्तु सभी से नहीं। हम सम्भवत: ठोकर से बचने की कोशिश से सम्बन्धित इस वृत्तांत से कुछ सीख सकते हैं, परन्तु जो कुछ पौलुस और प्राचीनों ने किया उसके लिए उनकी सराहना करना दूर की कौड़ी लगती है।

''सब मनुष्यों के लिए सब कुछ'' बनने की पौलुस की नीति अविश्वासियों को जीतने के लिए बनाई गई थी, विश्वासियों को मनाने के लिए नहीं। जहां तक यरूशलेम में अविश्वासियों की बात थी, मन्दिर की आराधना सभा में पौलुस का शामिल होना उसे प्रसिद्धि की किसी प्रतियोगिता को जीतने के लिए या यहूदियों में प्रचार करना आसान बनाने के लिए नहीं था (देखिए 9:29; 22:17-20)।[1]

रोमियों 14 ऐसी रीतियों के बारे में बताता है जिनके प्रति लोग उदासीन हो रहे थे। व्यवस्था में दी गई कुछ आज्ञाएं इतनी महत्वपूर्ण नहीं थीं जिससे कि नये नियम की शिक्षा प्रभावित नहीं होती (सातवें दिन, खाने पीने के नियमों आदि पर आधारित), परन्तु यह समझना कठिन है कि पाप बलि को ''उदासीनता की बात'' कह कर यूं ही खारिज कर दिया जाए।

इस सम्बन्ध में किसी प्रमाण के बारे में प्राचीनों और पौलुस ने गलत नहीं किया, यह समूह ऐसा प्रमाण देता है जिसे मानना कठिन है। बाइबल के लेखक प्रशंसा या निन्दा करने के लिए हमेशा रुकते नहीं हैं; उत्पत्ति 9:20, 21 में नूह के शराबी होने पर मूसा के व्यवहार पर ध्यान दीजिए। यह सत्य है कि पौलुस ने कहा कि उसने अपने विवेक की बात नहीं मोड़ी, परन्तु उस कथन में वह समय भी ले लिया गया था जब उसने मसीहियों को सताया था (प्रेरितों 8:1, 3)। पौलुस के शब्द यह प्रमाणित करते हैं कि उसने प्राचीनों के आदेशों का पालन करके *जान बूझकर* गलती नहीं की; इससे यह प्रमाणित नहीं होता कि उसके व्यवहार पर प्रश्न नहीं उठाया जा सकता।

निश्चय ही जो लोग यह सिखाते हैं कि परमेश्वर की आज्ञा मानने से अधिक महत्वपूर्ण लोगों को साथ लेकर चलना है, वे बहुत दूर निकल जाते हैं। याकूब ने बाद में स्वयं ज़ोर दिया कि सुलह से शुद्धि (चाहे वह नैतिक हो या शिक्षा सम्बन्धी) का अधिक महत्व है (याकूब 3:17)।

सीमित ''हां''

दूसरा गुट जो शायद सबसे बड़ा है अपनी हां को यह कहकर उचित ठहराएगा, कि ''पौलुस ने *परिस्थितियों के अनुसार* सही किया।'' वे सभी उन सही-सही बचाव परिस्थितियों पर सहमत नहीं होते, परन्तु मानते हैं कि हालात के अनुसार पौलुस ने वह सब किया जो कुछ वह कर सकता था। कई परिस्थितियां जिनका अक्सर उल्लेख हुआ है, उनके बारे में पहले ही चर्चा हो चुकी है। प्राचीनों और पौलुस दोनों पर कलीसिया के बाहर और अन्दर से अविश्वसनीय दबाव, ''सब मनुष्यों के लिए सब कुछ'' बनने का पौलुस का संकल्प आदि। तीन अन्य परिस्थितियों पर अक्सर ज़ोर दिया जाता है:

(1) यहूदी धर्म की विलक्षणता: नई वाचा में सरकारी अधिकार तथा धार्मिक अधिकार में अन्तर किया जाता है। हमें चाहिए कि ''जो कैसर का है, वह कैसर को; और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को'' दें (मत्ती 22:21ख; 1 पतरस 2:17 भी देखिए)। जब तक देश का कानून परमेश्वर के कानून का उल्लंघन न करे (प्रेरितों 5:29) तब तक हमें चाहिए कि हम देश के कानून का पालन करें (रोमियों 13:1-7)।[2] उसकी तुलना में, *पुरानी* वाचा के अधीन सरकारी अधिकार और धार्मिक अधिकार आपस में मिले हुए थे। मूसा की व्यवस्था में धार्मिक नियम और सामाजिक नियम मिश्रित थे। इस्राएलियों के लिए ये नियम न केवल उनकी धार्मिक गतिविधियों को ही, बल्कि एक राष्ट्र के रूप में उनके सभी कार्यों को संचालित करते थे। इसलिए, जैसे कि पहले ध्यान दिया गया है, बहुत से यहूदियों को अपने धर्म तथा अपने राष्ट्र में भिन्नता करना बड़ा कठिन लगता था। कम से कम 70 ई. में मन्दिर के गिरने तक अधिकांश यहूदी बलिदानों को अपनी राष्ट्रीय धरोहर के भाग के रूप में देखते थे। यह घटक अगली बात से जुड़ा हुआ है:

(2) अवस्था परिवर्तन का समय: वैधानिक रूप में व्यवस्था जिसमें बलिदानों से सम्बन्धित नियम थे, को क्रूस पर कीलों से जड़ दिया गया था (कुलुस्सियों 2:14, 16)।

व्यावहारिक रूप में, परमेश्वर ने यहूदियों को यहूदी धर्म से मसीहियत में जाने के लिए अवस्था परिवर्तन का समय व अवसर दिया।[3] इस कारण, कुछ आयतें तो यीशु की मृत्यु के समय व्यवस्था के समाप्त होने की बात करती हैं (उदाहरण के लिए, इफिसियों 2:14, 15) जबकि कुछ व्यवस्था के धीरे-धीरे समाप्त होने की बात करती हैं। उदाहरण के लिए, इब्रानियों 8:13 पहली वाचा को ''पुरानी'' कहता है, और फिर कहता है: ''और जो वस्तु पुरानी और जीर्ण हो जाती है उसका मिट जाना अनिवार्य है'' (2 कुरिन्थियों 3:7-11 भी देखिए)। मैथ्यू हैनरी ने *कमैन्ट्री ऑन द होल बाइबल में* टिप्पणी की, ''विधियों की व्यवस्था... मरी थी, दफनायी नहीं गयी थी।'' अन्ततः परमेश्वर ने व्यवस्था को कब ''दफनाया''? बहुत से लोग मानते हैं कि 70 ई. में मन्दिर के विनाश की अनुमति देकर परमेश्वर ने व्यवस्था परिवर्तन काल के अन्त का संकेत दे दिया। यदि यह सत्य है, तो 57 ई. में पौलुस के मन्दिर में जाने के समय यहूदी लोग व्यवस्था परिवर्तन काल में ही थे। यह घटक अगले घटक के बराबर है:

(3) धीरे-धीरे दिया गया प्रकाशन: प्रेरितों के काम के अपने अध्ययन में हमने देखा है कि परमेश्वर ने अपनी इच्छा एक ही बार में नहीं, बल्कि जैसे-जैसे आवश्यकता हुई और जैसे-जैसे लोग इसे पचा सकते थे, प्रकट की। उदाहरण के लिए, पिन्तेकुस्त के दिन पतरस के प्रवचन में परमेश्वर की समग्र योजना के रूप में अन्यजातियों को शामिल किया गया था (प्रेरितों 2:39), परन्तु पतरस को इसकी समझ तब तक नहीं लगी जब तक परमेश्वर ने उसे विशेष दर्शन नहीं दिया (प्रेरितों 10)। सुझाव दिया गया है कि बेशक पौलुस ने गलतियों और रोमियों की पत्रियां लिखी थीं, परन्तु उसने बलिदानों के लिए उन पुस्तकों की शिक्षाओं की तर्कसंगत प्रासंगिकता को नहीं समझा। यह कई वर्षों के बाद होना था जब परमेश्वर ने इस प्रकार के शब्दों को लिखने की प्रेरणा दी:[4] ''होम बलियों और पाप बलियों से तू प्रसन्न नहीं हुआ''; ''और जब ... क्षमा हो गई है, तो फिर पाप का बलिदान नहीं रहा'' (इब्रानियों 10:6, 18)। अब परमेश्वर का प्रकाशन सम्पूर्ण हो चुका है (2 पतरस 1:3; यहूदा 3); परन्तु उस समय नहीं था जब पौलुस मन्दिर में गया।

यह कहना ठीक हो सकता है कि पौलुस ने ''हालात के अनुसार'' सही किया; निश्चय ही ऊपर लिखी बातें शास्त्र में मिलती हैं। फिर भी, मुझे यह कहना कठिन लगता है कि यीशु द्वारा पापों के लिए सम्पूर्ण बलिदान दे देने के बाद *पाप* के लिए बलिदान भेंट करने की इच्छा करके पौलुस ने ठीक किया। बहुत से लोग जो इस दूसरी बात को मानते हैं, वे जानते हैं कि इस कठिनाई पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इस कठिनाई को पहचानने वाले ऐडम क्लार्क, ने बलिदानों की तुलना हमारे कर अदा करने से की है क्योंकि ''राज्य के मंत्रियों का खर्चा इसी से चलता था।'' एक और व्यक्ति इन बलिदानों की तुलना देश के कानून का उल्लंघन करने पर हमारे द्वारा दिए गए जुर्माने से करता है।[5]

मेरी समस्या नाज़ीर की मन्नत के बारे में नियम को पढ़कर है: मन्नत मानने वाले द्वारा लाए गए पक्षियों में से एक को ''उसके लिए प्रायश्चित'' (गिनती 6:11) करने के लिए ''पाप बलि'' के रूप में चढ़ाया जाता था। हम कई बार वाक्यांश ''प्रायश्चित करना'' को

किसी व्यक्ति के अपने साथी के सम्बन्ध में इस्तेमाल करते हैं, परन्तु यहूदियों के लिए गिनती 6 के इस वाक्यांश का क्या अर्थ था? निश्चय ही, वे इसे परमेश्वर के साथ उस व्यक्ति के सम्बन्ध के लिए इस्तेमाल करते थे। शायद पौलुस जानता था कि भेंट किए गए बलिदानों का किसी के प्राण के उद्धार से कुछ भी लेना देना नहीं था, परन्तु क्या याजक इस बात को समझ पाते? क्या कोई अविश्वासी यहूदी, जिसने पौलुस को बलिदानों के लिए प्रबन्ध करते देखा हो इसे समझ गया होगा? मैं यह विचार किए बिना नहीं रह सकता, कि पौलुस के कार्य पर प्रश्न उठाया जा सकता था।

सापेक्ष ''न''

मैं काफी लोगों की स्थिति से अधिक संतुष्ट हूं जो पौलुस के किए के कारण उसका बचाव नहीं कर सकते, परन्तु उसकी स्थिति से सहानुभूति प्रकट कर सकते हैं। यह गुट मानता है कि पौलुस के उस कार्य में परिस्थितियां महत्वपूर्ण थीं परन्तु लहू के बलिदान भेंट करने में उसके शामिल होने को न्यायोचित नहीं ठहराता।

इस समूह के बहुत से लोग केवल ''पाप'' शब्द के इस्तेमाल से बचते हैं। अत:, इसके स्थान पर वे प्राय: ''गलती'' शब्द का इस्तेमाल करते हैं। उनमें इस सम्बन्ध में भिन्नता पाई जाती है कि ''गलती'' कितनी गम्भीर थी, परन्तु वे इसी शब्द का इस्तेमाल करते दिखाई देते हैं। एक प्रचारक व शिक्षक जिसका मैं आदर करता हूं, ने हाल ही में लिखा है, ''मैं तो सिखाता हूं कि पौलुस ने गलती की।''[6] पिछले पाठ के आरम्भ में, मैंने जी. कैम्पबेल मॉर्गन को उद्धृत किया था जिसने कहा था कि ''पौलुस ने यहां पर अपनी सेवकाई की सबसे बड़ी भूल की।''

याद रखें कि हमें बाइबल के किसी भी पात्र के हर कार्य को उचित ठहराने की आवश्यकता नहीं है। चाहे वह सबसे अच्छा ही क्यों न हो। प्राचीन गलती कर सकते थे और कर सकते हैं, यहां तक कि आत्मा से प्रेरणा पाए लोगों ने भी गलतियां कीं (गलतियों 2:11-14)। पौलुस ने स्वयं भी ध्यान दिलाया कि वह सिद्ध नहीं (फिलिप्पियों 3:12) बल्कि[7] एक पापी था (रोमियों 3:23)।

बिना शर्त के ''नहीं!''

कुछ लोग जो शायद सबसे छोटे गुट के हैं, ज़ोर देते हैं कि पौलुस ने गलत किया और जो कुछ उसने किया उसके लिए कोई बहाना नहीं था! यह गुट सही हो सकता है, परन्तु इनकी स्थिति जितना सम्भव हो सके दूसरों के कामों पर रचना करने के आधारभूत सिद्धांत का उल्लंघन करती दिखती है (1 कुरिन्थियों 13:7)।

परमेश्वर का निर्णायक वचन

परमेश्वर को यह उचित नहीं लगा कि वह हमें बताए कि पौलुस का कार्य उसे कैसा लगा, इसलिए हमें इस बारे में धर्म सिद्धांतों के आधार पर बोलने से परहेज करना चाहिए

कि पौलुस के कार्य कहां गलत थे और कहां सही। परन्तु आज बलिदानों के विषय में पहले उठने वाले दूसरे प्रश्न के बारे में, परमेश्वर ने बात *की* है और हमें उसकी सुननी चाहिए। परमेश्वर ने कहा है कि आज पौलुस या किसी और के लिए लहू के बलिदान भेंट करना सही *नहीं* होगा।

एक आधिकारिक दृढ़ कथन

पौलुस द्वारा मन्दिर में एक सप्ताह का समय बिताने के कुछ समय बाद परमेश्वर ने इब्रानियों की पुस्तक लिखवाई,[8] जिसे या तो पौलुस ने या उसके मित्रों में से किसी एक ने लिखा। इब्रानियों की पुस्तक इब्रानी (अर्थात यहूदी) मसीहियों के नाम लिखी गई जो पुरानी रीतियों की ओर लौटने के बहकावे में आ गए थे। लेखक ने तर्क दिया कि मसीहियत में सब कुछ उत्तम है, सो उनके लिए यहूदी मत में लौटना मूर्खता ही नहीं बल्कि अनर्थ होगा। डोनल्ड बार्नहाउस इसे इस प्रकार कहता है: ''इब्रानियों की पुस्तक इब्रानियों के नाम उन्हें यह बताने के लिए लिखी गई कि वे इब्रानी बनना छोड़ दें!''[9]

विचाराधीन प्रश्न के बारे में मुख्य अध्याय इब्रानियों 7 से 10 हैं। 7 और 8 अध्यायों में, लेखक ने ध्यान दिलाया कि हारून की याजकाई समाप्त हो चुकी है। अध्याय 9 और 10 में, उसने ज़ोर दिया कि मसीह के बलिदान ने मूक जानवरों का स्थान ले लिया है। आपको इन चार अध्यायों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करना चाहिए। अभी के लिए, आइए बलिदान भेंट करने से सम्बन्धित एक भाग को देखते हैं:

> क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे। इसी कारण वह जगत में आते समय कहता है, कि बलिदान और भेंट तूने न चाही, पर मेरे लिए एक देह तैयार किया। होम-बलियों और पाप-बलियों से तू प्रसन्न नहीं हुआ। तब मैं ने कहा, देख, मैं आ गया हूं, (पवित्र शास्त्र में मेरे विषय में लिखा हुआ है) ताकि हे परमेश्वर तेरी इच्छा पूरी करूं। ऊपर तो वह कहता है, कि न तूने बलिदान और भेंट और होम-बलियों और पाप-बलियों को चाहा, और न उनसे प्रसन्न हुआ; यद्यपि ये बलिदान तो व्यवस्था के अनुसार चढ़ाए जाते हैं। फिर यह भी कहता है, कि देख, मैं आ गया हूं, ताकि तेरी इच्छा पूरी करूं; निदान, वह पहिले को उठा देता है, ताकि दूसरे को नियुक्त करे। उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं। और हर एक याजक तो खड़े होकर प्रति दिन सेवा करता है, और एक ही प्रकार के बलिदान को जो पापों को कभी भी दूर नहीं कर सकते; बार-बार चढ़ाता है। पर यह व्यक्ति तो पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिए चढ़ाकर परमेश्वर के दहिने जा बैठा। और उसी समय से इसकी बाट जोह रहा है, कि उसके बैरी उसके पांवों के नीचे की पीढ़ी बनें। क्योंकि उस ने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा के लिए सिद्ध कर दिया है। और पवित्र आत्मा भी हमें यही गवाही देता है; क्योंकि उस ने पहिले कहा था। कि प्रभु कहता है; कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद उन से बान्धूंगा वह यह है, कि मैं अपनी व्यवस्थाओं को उन के हृदय पर लिखूंगा और मैं उन के विवेक में डालूंगा। (फिर वह यह कहता है, कि) मैं उन के पापों को, और उन के अधर्म के कामों को फिर कभी स्मरण न करूंगा। और जब इन की क्षमा हो गई है, तो फिर पाप का बलिदान नहीं रहा (इब्रानियों 10:4-18)।

स्पष्टत:, मसीहियों पर इब्रानियों की शिक्षाओं का प्रभाव था क्योंकि जैसे कि बर्टन कॉफमैन ने टिप्पणी की, ''लूसियास द्वारा मन्दिर की भीड़ से पौलुस के बचाव के साथ, ऐसा कोई इतिहास नहीं है कि इसके बाद किसी मसीही ने दोबारा यहूदी मन्दिर में पांव रखा हो।''[10]

एक निर्णायक कार्य

यदि किसी को उससे संदेश नहीं मिला, तो परमेश्वर ने कुछ वर्षों बाद सदा के लिए इस मसले का हल कर दिया, उसने मन्दिर के विनाश की अनुमति दे दी। कॉफमैन का सुझाव है, ''प्रभु को मालूम था कि [मन्दिर की] रीतियां और बलिदान सभी यहूदियों पर इतना दबाव डालेंगे, कि उन्हें अपने बीच में से निकालने के बजाय परमेश्वर उन्हें यहूदियों में से निकाल देगा।''[11] मन्दिर के विनाश की बात करते हुए, ऐडम क्लार्क ने कहा है कि ''परमेश्वर ने अपने पूर्वप्रबन्ध से व्यवस्था को पूरा करना *असम्भव* करके मूसा के युग का अन्त कर दिया।''

70 ई. में मन्दिर के विनाश और बलिदानों के बन्द होने की भविष्यवाणी बहुत पहले की गई थी। दानिय्येल ने कहा था कि पवित्र स्थान रौंद डाला जाएगा (दानिय्येल 8:13), नगर और पवित्र स्थान नाश हो जाएगा (9:26), बलिदान और अन्न बलियां बन्द हो जाएंगी (9:27) और ''नित्य होम बलि उठाई जाएगी'' (12:11)।[12] इस नबी ने ''उजड़ने'' और ''घृणित'' शब्दों का इस्तेमाल करके भयानक कलेश की बात की थी (9:26, 27)। छह सौ से अधिक वर्षों के बाद, मन्दिर से निकलकर जाते हुए, यीशु ने अपने चेलों को यह कहकर चौंका दिया था कि ''मैं तुम से सच कहता हूं, यहां पर पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जो ढाया न जाएगा'' (मत्ती 24:2ख)। जब उससे इस वाक्य के बारे में पूछा गया तो उसने यह कहते हुए दानिय्येल की भविष्यवाणी को उद्धृत किया था कि ''जब तुम उस वस्तु को जिसकी चर्चा दानिय्येल भविष्यवक्ता के द्वारा हुई थी, पवित्र स्थान में खड़ी हुई देखो...'' (मत्ती 24:15; ध्यान दें आयत 21)।[13] लगभग चालीस वर्ष बाद, रोमी सेना ने मन्दिर सहित यरूशलेम को तहस-नहस कर दिया। जिससे बलिदान की यहूदी प्रणाली ''कल की बात हो गई।''[14]

आज, यहूदी हों या गैर यहूदी हमें पृथ्वी पर किसी याजक के पास नहीं, बल्कि अपने ''बड़े महायाजक ... अर्थात परमेश्वर के पुत्र यीशु'' (इब्रानियों 4:14) के पास आना चाहिए, ''जो स्वर्ग पर महामहिमन के सिंहासन के दाहिने जा बैठा'' (इब्रानियों 8:1)। हमें बैलों और बकरों के बलिदान नहीं (इब्रानियों 10:4), बल्कि यीशु का सिद्ध बलिदान देने के लिए (9:26) ''उसके द्वारा स्तुति रूपी बलिदान, अर्थात उन होंठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं'' चढ़ाना चाहिए (इब्रानियों 13:15)!

सारांश

मन्दिर में बलिदान की भेंट में पौलुस के योगदान से सम्बन्धित दो पाठों के बाद भी हम ऐडम क्लार्क के साथ यह कहने की इच्छा रखते हैं: ''इस कार्य में अवश्य ही कुछ ऐसा लगता है जिसे हम पूरी तरह से नहीं समझते।'' परन्तु, एक निष्कर्ष स्पष्ट है कि

पुरानी आदतें बड़ी मुश्किल से छूटती हैं। यरूशलेम के प्राचीन इस सच्चाई से जूझते थे। पौलुस भी इस सच्चाई से जूझता था। आप और मैं भी इससे जूझते हैं। हमें एक बात याद रखनी चाहिए कि सबसे महत्वपूर्ण बात जो हमें माननी चाहिए वह यह नहीं कि कोई चीज़ पुरानी है या नई, बल्कि यह कि वह सही है या गलत, और इस बात को परमेश्वर के वचन से तय करना चाहिए! उस वचन के प्रति आपकी वचनबद्धता को नवीन करने का यह अच्छा समय है!

पाद टिप्पणियां

[1]''प्रेरितों के काम, भाग-3'' के पृष्ठ 143 के पाठ ''जब आप सहमत नहीं हो सकते'' में पौलुस द्वारा तीमुथियुस के खतने से सम्बन्धित ''सब मनुष्यों के लिए सब कुछ बनने'' के सम्बन्ध में मैंने एक संक्षिप्त चर्चा शामिल की थी। [2]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 191 पर ''मसीही लोग तथा सरकार'' पाठ देखिए। [3]यहूदियों पर यह अनुग्रह करने के लिए परमेश्वर उनका ऋणी नहीं था; इस कारण मुझे एक लेखक द्वारा इस्तेमाल किया गया वाक्यांश ''अनुग्रह का युग'' अच्छा लगता है। [4]हमें सही-सही नहीं पता कि इब्रानियों की पत्री कब लिखी गई थी । इसमें याजकों के बलिदान चढ़ाने की बात कही गई है (इब्रानियों 10:11), इसलिए सम्भवत: यह 70 ई. में मन्दिर के विनाश से पूर्व लिखी गई थी। इतना हम दावे के साथ कह सकते हैं कि यह 57 ई. में यरूशलेम में पौलुस की गिरफ्तारी के कई वर्ष पश्चात लिखी गई थी। [5]निजी फोन कॉल, 8 जनवरी, 1996. [6]राय एच. लेनियर, जूनी., व्यक्तिगत पत्र, 7 दिसम्बर, 1995. [7]पौलुस द्वारा गलती को मानने के एक उदाहरण के लिए, देखिये प्रेरितों 23:5. [8]पाद टिप्पणी क्रम 4 देखिए। [9]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *द बाइबल एक्सपोजिशन कमैंट्री,* vol. 1में उद्धृत। [10]जेम्स बर्टन कॉफमैन, *कमैंट्री ऑन ऐक्ट्स*।

[11]वहीं। [12]दानिय्येल की पुस्तक की व्याख्या का प्रयास इस काम के दायरे से बाहर है। परन्तु, बहुत से विद्वान सहमत हैं कि यहां उद्धृत शब्द 70 ई. में यरूशलेम के विनाश की ही बात करते हैं। [13]आयत 3 में, चेले अपने ख्याल से एक ही प्रश्न पूछ रहे थे। (क्योंकि उनकी मान्यता यह थी कि यरूशलेम का विनाश जगत के अन्त में होगा)। वास्तव में, वे यरूशलेम के विनाश तथा जगत के अन्त के बारे में *भी* प्रश्न पूछ रहे थे। इस कारण, अध्याय का पहला भाग मुख्यत: यरूशलेम के विनाश के बारे में है, जबकि अन्तिम भाग मुख्यत: जगत के अन्त के बारे में है। मसीह के जीवन पर आने वाली एक शृंखला में मत्ती 24 पर चर्चा की जाएगी। [14]रिचर्ड ओस्टर, *द ऐक्ट्स ऑफ द अपोस्टल्ज़,* द लिविंग वर्ड कमेंट्री सीरीज़, पार्ट 2. यह भी ध्यान दिया जा सकता है कि आराधनालय की उपासना में मसीही यहूदियों की बात यहूदियों ने बाद में अपने आप ही सुलझा ली; पहली शताब्दी के अन्तिम दशक में, उन्होंने प्रार्थना जोड़ी कि ''नासरी और धर्म विरोधियों का एक पल में नाश हो जाए और वे जीवन की पुस्तक में से निकाल दिए जाएं'' (एफ.एफ. ब्रूस, *द बुक ऑफ ऐक्ट्स,* संशो. अंक में उद्धृत)।